CATHOLIC CHRONICLE

|  | MONTREAL, FRIDAY, DECEMBER 22, 1865. |  |  |  |
| :---: | :---: | :---: | :---: | :---: |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
| he was tor ferer wans at at tue ereatest heieght, <br>  teme Uuction; but fabien died withouta a 1 Leth <br>  <br>  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
| doubt, uncertained but he was too young to comtrue, remad her grief. |  |  |  |  |
| Sorrow is often a real blessing; it recalls the sinner to the arms of God, and makes him eryout, with Darid, 'Thou bast aflicted me in |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
| thay her husband; her unsubdued heart was filled with poignant regret, to which she gave vent in bitter complaiats and in |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
| One moment you might behold this untortunate woman-tbe sad exainple of tilly and weakeness |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
| despair. Aer in of swetness. Not a ray of stightest feing on hepe ilunied ine darkness of leer mind ; it was |  |  |  |  |
| engrossed with thoughts of the past alone. Sue dernanded with veheraeal geskres the restosation |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
| of Fabien to life-to bealtu-lo strength. She besteged Heaven mith obstinate inpatience; but ber fruitless prager naight be conplazed to the stormy billow which roams and wold not release his rictim to suctu a phaiotif. <br> III. |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
| Worldiliggs are ever pithess, and hee hearless such polent grat would be but of short dura |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
| were for ever hed, continued to overwheim herwith deep sorrow long after outsard motining |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
| was cist of and the of saduess prevented auly de. sire for contracting secoud marrage. Spe bat always had a decided laste for study, |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
| Sad now took it up with great pyor, in bopes of filing the dread racuum in her heart. She |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
| then for anolber. She tried to theore or hose projects of reform which arose and made a nome |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
| Jocts of terornn the cricle of her immedate ac. <br> puainance. She then devoled herself to Ger |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
| of Pericles; she saw the Forum, and toe names of Cicero and Cæsar gave her a momentary |  |  |  |  |
|  <br>  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
| sed by. Sine ras no ionger pong; ine pas. |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |
| as sorrowinl anu lon <br> is true she had ber son, whom she loved |  |  |  |  |

